❊ वालीमिलन समारोह ❊

इतनी मेहरबानी मेरे ईश्वर, बनाये रखना
जो रास्ता सही हो, उसी पर चलाये रखना
न दुखे दिल माँ-बाप का मेरे शब्दो से
इतना रहम तू मेरे भगवान, मुझपे बनाये रखना (२)

शांति के दाता श्री शांतिनाथ भगवान एवं श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी की छत्र छाया तथा युगप्रधान प.पू. पन्यास श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा. की हृदयस्थली, तपोवन संस्कारधाम, नवसारी से सत्र 2017-18 का प्रथम ''वालीमिलन समारोह'' कार्यक्रम बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।

सर्वप्रथम कार्यक्रम का प्रारंभ प.पू. गुरुमा के वंदन के बाद अनंत ज्ञान के भंडारक, तपस्वी मुनिराज श्री अनंतसुंदर वि.म.सा., पू. मुनिराज श्री योगरुची वि.म.सा. तथा पू. मुनिराज श्री राजर्षि वि.म.सा. को सामुहिक रुप से वंदन करके किया गया बाद मे म.सा. के मुखाग्रबिंदु से निकली हुई ''अमी वाणी'' से मांगलिक रुपी प्रसाद का सभी ने रसपान किया ।

कार्यक्रम की अगली कडी से जो पुराने बच्चे म्यूजिक की 4th Exam से पास हुए थे उनका बहुमान किया गया, उसी के दौरान घोषणा की गई की ''अखिल गुजरात संगीत विद्यापीठ'', वेरावल ने संगीत के लिए तपोवन को अलग से सेन्टर दिया है। उसी के पश्चात बच्चो के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया । सबसे पहले बच्चोने स्वागत गीत प्रस्तुत कीया ।

''उपर जिसका अंत नहीं, उसे आसमा कहते है ।
और जहाँ से जिसका अंत नहीं, उसे माँ कहते है ॥

निश्चिंत ही माँ के एसे असीम वात्सल्य को प्रकट एक ''माँ'' डांस के द्वारा किया गया। इसके पश्चात जैनम प्रियांकभाई पारेखने अपने वक्तव्य में बताया की तपोवन का यह आदर्श, संस्कार, शिक्षा व भक्ति तथा अष्टप्रकारी पूजा यूक्त अतिरमणीय माहोल तपोवनी छात्रों को पूरी तरह से चार्ज करता है। इसी के पश्चात बिनाकुछ बोले ''पानी का मूल्य'' समझने की शिक्षा देनेवाला माइम डांस बच्चों के द्वारा किया गया ।

कार्यक्रम की अगली कडी में जो पुराने बच्चे यदि तपोवन मे किसी नए बच्चो को लाए है तो उस पुराने बच्चे का बहुमान ट्रस्टीश्री विनोदभाई व विधालय के प्राचार्य द्वारा किया गया। तत्पश्चात गरबा नृत्य के द्वारा प्रभुभक्ति बच्चो के द्वारा की गई।

जिस प्रकार समय रुपी डोर के आगे हम एक कठपुतली की तरह नाचते है उसी भावना को व्यक्त एक बहुत ही सुंदर कठपुतली नृत्य के द्वारा व्यक्त किया गया । उसी के दौरान गुरुकुल की गतिविधियों को प्रोजेक्टर पर बताया गया । उसी के पश्चात छोटे बच्चो के द्वारा स्वयं ही सभी वाधयंत्रो के साथ भक्ति की गई । उसी के पश्चात सत्र 2016-17 से 10th के Rankers छात्र (1) धरोड दौनिल अल्पेशभाई (2) देवर्श दिपकभाई संघवी तथा विराज कमलेशभाई पटवा (3) पार्थ तिलकभाई जैन आदि सभी बच्चो का बहुमान भी किया गया था । साथ ही निमेषभाई के द्वारा बताया गया कि प.पू. पन्यास प्रवर श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा. ने तपोवन की प्रेरणां 1983 मे की थी,

लेकिन इस स्थापना के पीछे प.पू. गुरुमा का क्या उद्देश्य था? उनके द्वारा यह भी बताया गया कि जब निमेषभाई खुद तपोवनी छात्र थे तब और आज के तपोवनी जीवन में क्या परिवर्तन आया है।

'जीवन मे आपसे कौन मिलेगा ये समय तय करेगा ।
जीवन में आप किससे मिलेंगे, ये आपका दिल तय करेगा ॥
परंतु जीवन में आप किस के मन में बने रहेंगे,
यह आपका व्यवहार तय करेगा ॥''

प.पू. श्री अनंतसुंदर वि. म. सा. ने भी अपने प्रवचन मे अपने आचरण से सदाचार, प्रभुभक्ति व वात्सल्य के गुण होने पर बल दिया है। पू. गुरुदेव का मानना है कि बच्चो का कनेकशन सीधे भगवान से होना चाहिए, जो कि प्रभुभक्ति व वात्सल्य से ही सम्भव है ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम मे Management Committee के सदस्य व कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री धर्मेशभाई, श्री हर्षदभाई, विनोदभाई, निमेशभाई व विधालय के प्राचार्य का महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान हुआ।

वालीमिलन की सफलता में सभी मोटाभाई व मासीबा तथा तपोवनी बच्चो की भी अपनी महत्वपूर्ण सक्रिय भूमिका रही थी। लेकिन इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के सूत्रधार के रुप में तपोवन के ''रुपल मासीबा और चैताली मासीबा'' की कडी महेनत थी । देखा जाए तो इस सांस्कृतिक कार्यक्रम की सफलता का श्रेय उन्ही को जाता है। उसके पश्चात ''अंकित मोटाभाई'' ने स्पेशल डांगी डांस बच्चो के द्वारा करवाया। जिसमें डांस के प्रारंभ से लेकर अंत तक बच्चों व वालीओ की तालियाँ बंद नहीं हुई। सम्पूर्ण कार्यक्रम नए तपोवनी बच्चो के द्वारा किया गया।

''हर 'फूल' के पीछे 'शूल' होता है,
हर 'भूल' के पीछे 'मूल' होता है ।
'शूल' और 'मूल' से क्यो धबराते हो,
हर 'प्रतिकूल' के पीछे 'अनुकूल' होता है ॥''

❊ स्वतंत्रता दिवस समारोह ❊

''मंगल पांडे से शुरु करु या मेरठ के गलियारो से
हाहाकारो से शुरु करु या हरहर बम-बम के नारो से ।
स्वतंत्रता दिवस की गाथा - गानी हमको होगी,
तो क्यों न उसको शुरु करु में, भारत माँ के जयकारो से ॥

जैसा की आप सबको विदित है की भारत वर्ष सैंकडो वर्षो तक परतंत्रता की बेडियो से जकडा रहा है, तो भी पिंजरबंद्ध की भांति गर्जना करता रहा है। 15 अगस्त 1947 की अर्द्धरात्रि को शताब्दियो की खोई स्वतंत्रता भारत को पुनः प्राप्त हो गई। और भारत इस दासता के पिंजरे से मुक्त हो गया । इस हेतु तपोवन मे भी पूरे देश की तरह 15 अगस्त का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ किया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ प.पू. पन्यास